International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 1 || January. 2018 || PP. 113-118

संत चरणदास का व्यक्तित्व और कृतित्व

सिया राम मीणा
प्रवक्ता , हिन्दी विभाग , बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय , अलवर (राज.) ३०१००१

सार संक्षेप

विक्रम सम्वत् की चौदहवीं सदी से लेकर 19 वीं सदी तक भारत में आध्यात्मिक क्षेत्र में जिस नव चेतना का विकास हुआ, उसका श्रेय भक्त व निर्गुण सन्त कवियों को दिया जा सकता है। जिन्होंने अपने ज्ञान, ध्यान, योग, कर्म आदि से समाज को नये दर्न, चेतना का मार्ग विकसित किया। राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र जिसे मत्स्यांचल प्रदे कहा जाता है। इसमें एक महान सन्त का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्हें संत चरणदास के नाम से जाना जाता है। उनके अनुयायियों द्वारा बाद में चरणदासी सम्प्रदाय चलाया गया।

मुख्य बिन्दु :– जीवन परिचय , माता पिता , विवाह , गुरु , शिष्य , वेशभूषा एवं नियम ।

जीवन परिचय

तेरहवीं से अठारहवीं शताब्दी तक का समय भारतीय जीवन जगत में उथल–पुथल का समय रहा है। इन परिस्थितियों के बीच मेवात की धरती पर चरणदास का जन्म हुआ, जिन्होंने समाज व साहित्य को नवचेतना प्रदान की। इनके जीवन चरित्र पर प्रका डालने वालों में श्री रामरूप, सहजोबाई तथा विदयाल गौड़ का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। ये सभी एकमत हैं। 'गुरु भक्ति प्रका' कवि की जीवनी का सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ है।

जन्म काल

इनके जन्म काल के विषय में कोई अन्तस्साक्ष्य उपलब्ध नहीं होता, किन्तु सभी मतों के बीच रामरूप जी का मत प्रामाणिक माना गया है। इनके अनुसार चरणदास का जन्म मंगलवार, भादौं सुदी तीज विक्रम सम्वत् 1760 (1703 ई.) को सूर्योदय के सात घड़ी (घण्टा) पचात् तुला लग्न में हुआ।

भादौं तीज सुदी जबै आया मंगल द्यौस।

माता पिता अरु कुटुम्ब की पूरी कीनी हौस।।

सात घड़ी सूरज चढ़े लियै भक्त औतार

नर नारीं पुलकित भये करन लगे त्यौहार।।

....

भादों शुक्ला तीज कों, कुजों कूख मंझार।

बालनाम रणजीत घर, प्रकटे कृष्ण मुरार।।

सम्वत् सत्रह सौ गिनो, ऊपर साठ पिछान।

प्रगटे भार्गव वां में, कृष्ण आं प्रभु आन।।

जन्म स्थान

संत शिरोमणि चरणदास जी का जन्म स्थान राजस्थान राज्य के अलवर (मेवात प्रदे) में डेहरा नामक ग्राम में हुआ था, जो कि अलवर से उत्तर में 6 मील यानि 3 कोस दूर अवस्थित है। 'ज्ञानस्वरोदय वर्णन' में स्वयं चरणदास जी ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है–

डहरे में मेरो जनम नाम रणजीत पिछानो।

मुरली को सुत जान जात दूसरि पहिंचानो।

बाल अवस्था मांहि बहुरि दिल्ली में आयो।

रमत मिले शुकदेव नाम चरणदास धरायो।

जोग जुक्ति हरि भक्तिकरि ब्रह्मज्ञान दृढ़करि गह्यो।

आतम तत्व विचारि कै अजपा में मन सनि रह्यो।

'गुरु भक्ति प्रका' के लेखक रामरूप ने भी इनके जन्म स्थान की डेहरा (अलवर) में होने की पुष्टि की है। इनके अतिरिक्त सहजोबाई, रूपमाधुरी शरण, सरस माधुरी, जुगल माधुरी शरण आदि ने भी चरणदास का जन्म स्थान डेहरा ही माना है। क्षिति मोहन सैन, जेम्स हेस्टिंग्ज, डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, विलियम क्रूक्स, ग्रियर्सन, गणे प्रसाद द्विवेदी, डॉ. रामकुमार वर्मा व वि शंकर मिश्र आदि सभी ने उक्त मत का समर्थन किया है और यही सर्वमान्य जन्म स्थान है।

माता–पिता (परिचय)

संत चरणदास की माता का नाम कुंजो और पिता का नाम मुरलीधर था। चरणदास की वांवली पर प्रका डालने वाले सभी लेखक एक मत हैं। किसी प्रकार का कोई विवाद नहीं है। चरणदास ने स्वयं ने अपने पिता का नाम मुरलीधर स्वीकार किया है। 'गुरु भक्ति प्रका' में रामरूप जी ने इनके वां वृक्ष का परिचय इस प्रकार दिया है–

सूबस बास बहुत सुखदाई। जहाँ विराजै शोभन राई।।

गृहस्थ आश्रम होके मांहीं। ऐसी प्रेम भक्ति जिन मोहीं।।

तिन सो चतुरदास भये ज्ञानी। ताके सुत गिरधर परनामी।।

गिरधर के लाहड़ बड़भागी। नवधा भक्ति मांहि अनुरागी।।

जगनदास तिनके सुत जानौ। उनके प्रागदास पहिचानौ।।

जिनके मुरलीधर सुत भये। सो भी सदा भक्ति में रहे।।

ताके जनम लियो सुखदाई। रामरूप तिनकी शरणाई।।

जाति

कबीरदास व संत दादूदयाल ने संत की जाति के विषय में लिखा है कि साधु की जात न पूछै तो ही ठीक है। संत चरणदास ने अपने आत्म परिचय में अपना जन्म ढूसर (वैय कुल) में हुआ माना है।

डहरे में मेरो जनम नाम रणजीत पिछानों।

मुरली को सूत जान जात ढूसरि पहिंचानां ।।

"राजपूताने के मेवात देश में डेहरा नाम का एक ग्राम है। उस ग्राम में ढूसर बनियों के बहुत से घर हैं..... उन्हीं परिवारों में से एक परिवार में मुरलीधर नाम के एक भाग्यवान पुरुष हुए.....।"36 स्वयं चरणदास ने अपने आपको ढूसर माना है। किन्तु पीताम्बर दत्त, बड़थ्वाल, भुवनेवर माधव तथा सम्पादक योगांक (कल्याण) इस विषय में मौन हैं। मेरा मानना है कि इनका जन्म ढूसर कुल में ही हुआ था।

नाम

साहित्यिक जगत में चरणदासी सम्प्रदाय के प्रवर्तक के क्रमाः रणजीत, चरणदास, श्यामचरण दासाचार्य आदि नाम मिलते हैं। बाल्यकाल में जन्म के समय कुल ज्योतिषी द्वारा इनका नाम रणजीत रखा गया। जैम्स हेस्टिंग्स, जार्ज ग्रियर्सन, पराराम चतुर्वेदी, गणे प्रसाद द्विवेदी, रामलाल और त्रिलोकी नारायण आदि लेखक इसी मत से सहमति प्रकट करते हैं। इनके गुरु ने दीक्षा देकर इनका नाम 'चरणदास' रखा–

बाल अवस्था मांहि बहुरि दिल्ली में आयो।

रमत मिले शुकदेव नाम चरणदास धरायो।।

रामरूप जी के मतानुसार कवि का दूसरा नामकरण गुरु शुकदेव जी ने सम्वत् 1779 (19 वर्ष की अवस्था) में दीक्षा देने के पचात चरणदास किया। उक्त दोनों मतों से हम सहमत हैं।

बाल्यकाल

सन्त परम्परा के अन्तर्गत 'गुरुभक्ति प्रका' (रामरूप जी) चरणदास की जीवनी साहित्य का सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें चरणदास के जीवन का करीब 40 पृष्ठों में वर्णन किया गया है। रामरूप जी के शब्दों में चरणदास जी एक वर्ष की अवस्था में ही बाल सुलभ मधुर तोतले शब्द बोलने लगे थे। दूसरे वर्ष में प्रवे करते ही चलने फिरने की शक्ति का विकास हुआ।

चौथे वर्ष में ही इस बालक ने ईवर का नाम जपना प्रारम्भ कर दिया था। बच्चे के इस प्रकार के आचरण को देखकर सभी लोग आचर्य चकित रह गए। धीरे–धीरे ईवर में आस्था बढ़ने लगी। प्रातः जल्दी उठकर सूर्योदय से पूर्व ही ब्रह्म के ध्यान में संलग्न रहने लगे।

चरणदास के इस प्रकार के आचरण को देखकर लोग उन्हें बौरा और बुद्धिहीन समझते थे। बच्चों के बीच इस अवस्था में खेलते–खेलते सभी से 'हरे राम' 'हरे राम' का जय करवाते थे। आठ वर्ष की अवस्था में माता ने चरणदास की सगाई करने का आग्रह किया लेकिन प्रयास विफल रहा। सभी ने उन्हें समझाया था लेकिन बालक पर इन उपदों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जब बालक चरणदास घर छोड़कर फकीर बन जाने की हठ करने लगा। तब अपनी एक मात्र सन्तान को कृपण के धन के समान सहेजकर रखने वाली माता कुंजो देवी का अन्तःकरण बालक की हठ देखकर अत्यन्त व्याकुल हो उठा तो बालक चरणदास ने प्रत्युत्तर में लिखा–

जो तुम सुनि के रोष न मानो, जो मैं कहूँ सांच ही जानो।

जा दिन जीव देहि धरि आयो, कुटुम्ब लोग कोइ संग न लायो।।

जीव अकेला भर मत आया, तन तजि के भटकत ही पाया।

जीवित कष्ट जगत में पावै, तन छूटे जमपुर को जावै।

बालक चरणदास के हृदय में ईवर के प्रति आस्था बढ़ती जा रही थी। वे चिन्तन ध्यान करने लगे और धीरे–धीरे आयु बढ़ती जा रही थी। "ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही ब्रह्म के रहस्य की जिज्ञासा उत्तरोत्तर बढती ही गई। एकान्त प्रियता, आत्म विस्मृति, आत्म चिन्तन, में चरणदास लीन रहने लगे। सोलह वर्ष की अवस्था में चरणदास गुरु के उपदे के लिए व्याकुल होकर फिरने लगे।"39

गुरु

चरणदास जी के गुरु व्यास पुत्र शुकदेव जी माने जाते हैं। जार्ज ग्रियर्सन, जेम्स हेस्टिंग्ज, एच.एच.विल्सन, पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल आदि सभी ने एक मत से इनके गुरु का नाम शुकदेव ही माना है। स्वयं चरणदास ने भी स्थान–स्थान पर अपने गुरु के रूप में शुकदेव का ही उल्लेख किया है। गुरु की तला में व्यथित चरणदास को ध्यान में एक आदे मिला और ध्यानावस्था के दौरान मिली जानकारी के अनुसार चरणदास वहाँ गया और वहाँ अलौकिक, कांतिमान व्यक्ति को देख कर उनका मन अत्यन्त पुलकित हुआ। अपने मन से एक विचार निकला– सत गुरु कूं ढूंढ़त–ढूंढ़त सो अब लीन्हे पाय।

सद्गुरु प्राप्ति पर गुरु द्वारा दीक्षा–मंत्र सुनाने के दौरान नित्य नियम, उपासना पद्धति, प्रणवोपासना, प्राणायाम आदि का मर्म बताया। शोध से ज्ञात हुआ कि बृहस्पतिवार, चैत्र पड़वा विक्रम सम्वत् 1779 को गुरु शुकदेव जी ने चरणदास जी को दीक्षित किया।

गये वर्ष उन्नीस में, गंगातट शुकतार।

साक्षात दर्शन दिये, शुक मुनि व्यास कुमार।।

गुरुदीक्षा दी विधि सहित, मंत्र सुनायो कान।

योग ज्ञान वैराग दे, किये शिष्य हित मान।।

शिक्षा :–

संत चरणदास को साक्षर करने के लिए परिजनों ने किसी पाठाला में आचार्य के पास भेजा। आचार्य ने वर्णाक्षर लिखकर उन पर अभ्यास करने के लिए बोला, किन्तु चरणदास (रणजीत) ने आचार्य से कृष्ण भक्ति नाम महिमा सिखाने का निवेदन किया। पितामह प्रागदास ने उन्हें साक्षर बनाने के प्रयास किए किन्तु प्रागदास को अपने प्रयासों में निरा ही हाथ लगी। क्षि के प्रति बालक रणजीत के उदासीन रवैये से दादा–दादी हता हो गए। तब उन्होंने आठ वर्ष की अवस्था में वैवाहिक बन्धन में बाँधने का प्रयास किया, किन्तु विरक्त मन वाले रणजीत को सांसारिक बन्धन बन्धना स्वीकार नहीं हुआ। दादा–दादी व माताजी के विभिन्न तर्कों को बालक रणजीत ने निरुत्तर करने को मजबूर किया। अन्त में घर छोड़ने की घोषणा कर दी। आचार्य ने बालक रणजीत की क्षि के क्षेत्र में असफलता की भविष्य वाणी की। घरवालें दूसरे आचार्य के पास ले गए, किन्तु वहाँ भी सफलता नहीं मिली। अन्त में परिजनों के मध्य दादी ने रणजीत को बुलाया और हँसकर कहा–

दादी हँस कर निकट बुलाया।

खेलो, खावो, मन भाया।।

पढ़ियों जब तेरे मन आवे।

ऐसा कौन जू तोहि सतावे।।

इसी बात का रणजीत पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उनके पढ़ने का क्रम सदैव के लिए स्थापित हो गया।

विवाह

सांसारिक विरक्ति वाले रणजीत को सांसारिक माया मोह में बाँधने के लिए परिजनों ने वैवाहिक बंधन में बाँधने के काफी प्रयास किए। मातामही, मातामह व माता की बातों का रणजीत के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अपना विवाह न करने के तर्क में कहा–

अरु बोले सुन माय सुभागीं। हमकूं क्या तुम बेचन लागी।।

जान बूझ करि ताना दीया। सो माता हंस करि लीया।।

ब्याह किये दुःख होय अपारा। जाका फैले बहु विस्तारा।।

जाकी चिन्ता तनकूं जारे। भजन छुटे गोविन्द मुरारे।।

जो मैं माता तोहि पियारो। विपता में मोकूं मत डारो।।

मैं तो भक्ति कृष्ण की करिहूँ। मोहजाल फन्दे नहिं परि हूँ।।

बालक के विवाह न करने के दृढ़ संकल्प को सुनकर सारे परिजन थक–हारकर मौन हो गए क्योंकि रणजीत (चरणदास) ने घर त्यागने की चेतावनी दे डाली थी कि फिर कभी वापस घर नहीं लोटूँगा और मेरा मुख देखना असम्भव हो जायेगा। इस बात को सुनकर सब चुप हो गए और माता ने कहा– ब्याह सगाई ना करें जो तुम्हारा या मन्न।

शिष्य परम्परा

सन्त चरणदास बिना किसी भेदभाव के सम दृष्टि से ज्ञान और शिक्षा के पिपासु व्यक्तियों को अपने शिष्य के रूप में बनाने हेतु प्राथमिकता देते थे। इनके शिष्यों में रामरूप, सहजोबाई, जुगतानन्द जी, रामप्रताप जी, बल्लभ जी, दयाबाई का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। इनके शिष्य पंजाब, दिल्ली, पचिमी उत्तर प्रदे, हरियाणा, हिमाचल प्रदे, राजस्थान, मध्यप्रदे आदि दूर–दराज तक देखने को मिलते हैं।

शिष्यों ने , चित्रकूट, उज्जैन, पटना, मुंगेर, पुरी विदूर आदि स्थानों पर गद्दियाँ स्थापित की। ष्यिों ने चरणदास के भावानुरूप निर्गुण व सगुण भक्ति के बीच अद्भुत समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। शिष्यों ने अनेक स्थानों पर गद्दियों की स्थापना की, जिनकी संख्या 52 थी। सब मिलाकर चरणदास जी के 108 गद्दी स्थापक शिष्य थे। इनके शिष्यों में अन्त्जयों की संख्या अपेक्षाकृत कम थी। उनके शिष्यों में बनिया, मुसलमान, खटीक, मीना, आदि का उल्लेख मिलता है।

संत चरणदास के मरणोपरान्त उच्च वर्ग के लोगों का उनके मठ, गद्दी पर आधिपत्य होता चला गया। यह साम्प्रदायिक भेद आज भी उत्सव, पर्व के अवसर पर दिखाई देता है। धनी वर्ग के बनिए, भार्गव, ब्राह्मण अधिकता में दिखाई देते हैं। इन्हीं भावों से प्रेरित होकर चरणदास की विभिन्न गद्दियों के मठाधी भी अपने उत्तराधिकरी के रूप में ब्राह्मणों, भार्गवों, वैयों को ही अपनाते हैं।

चरणदास जी की मुख्य गद्दी की दिल्ली में देख–रेख तीनों शिष्यों के नाम वाली (रामरूप, जुगतानन्द, सहजोबाई) होती आ रही है। अब औचारिक रूप से कोई भी शिष्य इन गद्दियों की परम्परानुरूप देख–रेख कर रहा है।

वेशभूषा

संत चरणदास की वेशभूषा के विषय में विष उल्लेख सन्त चरणदासी सम्प्रदाय प्रकरण में देखने को मिलता है किन्तु 'गुरुभक्ति प्रका' में चरणदास की शारीरिक बनावट के विषय में खास जानकारी उपलब्ध नहीं होती है। इतना पता जरूर चलता है कि उनका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावाली था। शांत स्वभाव उनके व्यक्तित्व की बड़ी विषता रही है। उनका मुख मण्डल कांति से युक्त था। उनका शरीर सुड़ोल और मनोहर प्रतीत होता था।

चरणदास जी आजानुबाहु थे तथा शरीर लम्बा व शक्ति सम्पन्न था। उनकी वर्तमान तस्वीर से मालुम चलता है कि उनके कान लम्बे थे। मुख मण्डल से शांति व दृढ़ता के भाव प्रस्फुटित होते थे। विाल नेत्र एवं बड़ी–बड़ी मूँछे उनके व्यक्तित्व को प्रभावाली बनाती थी। उनकी पोाक में लम्बा कुरता, पगड़ी और चादर विष रूप से दिखाई पड़ती थी। मस्तक पर श्री तिलक दृष्टिगत होता था।

नियम व कर्त्तव्य

संत चरणदास के काव्य के सम्बन्ध में शोध कार्य के दौरान अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अपने शिष्यों व मानव समाज को नियमों व कर्त्तव्यों का नित्य पालन करना चाहिए। उनका उल्लेख निम्न प्रकार किया जा सकता है–

1. गुरुनिष्ट एवं आज्ञाकारी होना 2.साधु सेवा परायण होना 3. सम्प्रदाय सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करना 4. कण्ठी, तिलक निष्ठा 5. पर त्रिया व परधन निषेध 6. हरि गुरु, जन्म कर्म उत्सव करने की दृढ़ भक्ति 7. जाति–विजाति परीक्षा 8. सजाति का सत्संग और विजाति का परित्याग करना 9. गुरुवाणी का नित्य पाठ 10. गुरु मंत्र में दृढ़ निष्ठा 11. सदशास्त्र का आज्ञावती होना 12. विवासघात व मिथ्यावाद का परित्याग 13. अन्न व वस्त्र आदि का यथाक्ति दान 14. नित्य नियम के पचात ही अन्न जल ग्रहण करना 15. भगवत अनर्पित वस्तु भक्षण–परित्याग 16. साधु–गुरु सेवा करना 17. परनिंदा–परद्रोह त्याग 18. निरभिमान बहना तथा प्रेमपूर्ण आचरण करना 19. यथा लाभ, सन्तोष, भगवत इच्छा में प्रसन्न होना 20. जगत को अनित्य मानना 21. मादक द्रव्य परित्याग 22. हिंसा से दूरवा 23. दुर्वचन परित्याग 24. कपट, छल, अहंकार, दुराग्रह–परित्याग 25. कथनी जैसी करनी 26. नामापराध–त्याग 27. सेवापराध त्याग 28. श्री इष्टदेव–र्दान का नियम 29. मान–बढ़ाई परित्याग 30. अनन्यता का व्रत 31. गुरु द्वारा प्राप्त भाव से मानसी पूजा करना 32. तन–मन से परोपकारी बनना 33. आत्मवत् सर्वभूते तु मानना 34. संसार को क्षीण मानना

निष्कर्ष :–

उक्त सभी प्रमुख दायित्यों का पालन करना व नियम मानना प्रत्येक शिष्य या मनुष्य के लिए आवयक था। चरणदास जी के बताए, इन नियमों व कर्त्तव्यों का पालन करने से समाज को नई दिशा व सद्मार्ग सहज ही प्राप्त हो सकता है। इन्हीं भावो से प्रेरित होकर संत चरणदास के व्यक्तित्व के अन्तर्गत इन खास बातों का शोध प्रबन्ध में उल्लेख किया है।

सन्दर्भ :–

1ण भक्ति पदार्थ वर्णन–श्री भक्ति सागर ग्रंथ–चरणदास पृ.सं. 192, 196
2ण चरणदास–डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित पृ.सं. 21
3ण हिन्दी साहित्य की भूमिका–आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ.सं. 31
4ण हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचन्द्र ाक्ल पृ.सं. 44
5ण राजपूताने का इतिहास–गौरींकर हीराचन्द्र औझा पृ.सं. 123
6ण पूर्व आधुनिक राजस्थान–डॉ. रघुवीर सिंह पृ.सं. 64
7ण धर्म जहाज वर्णन–श्री भक्ति सागर ग्रंथ–चरणदास पृ.सं. 25
8ण श्याम चरणदासाचार्य चरितामृत–श्रीभक्ति सागर ग्रंथ–चरणदास पृ.सं. 9
9ण ज्ञान स्वरोदय वर्णन–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 130
10ण गुरु भक्ति प्रका–रामरूप जी पृ.सं. 33
11ण ज्ञानस्वरोदय वर्णन–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 130
12ण भक्त चरितावली, भाग– प् श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, पृ.सं. 342

13ण ज्ञानस्वरोदय वर्णन–भक्ति सागर–चरणदास पृ. सं. 130
14ण गुरु भक्ति प्रका–रामरूप जी पृ. सं. 35, 36
15ण गुरु भक्ति प्रका–रामरूपजी पृ.सं. 44
16ण श्याम चरणदासाचार्य चरितामृत–भक्तिसागर–चरणदास पृ.सं. 10
17ण गुरु भक्ति प्रका–रामरूपजी पृ. सं. 15
18ण गुरु भक्ति प्रका–रामरूप जी पृ. सं. 23, 24
19ण भक्ति पदार्थ वर्णन–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 478
20ण पंचोपनिषद–भक्ति सागर–चरणदास छन्द 16, पृ.सं. 135
21ण पंचोपनिषद–भक्ति सागर–चरणदास छन्द 26, पृ. सं. 140
22ण ब्रह्मज्ञान सागर–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 310
23ण ब्रह्मज्ञान सागर–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 311
24ण अष्टांगयोग–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 56
25ण ज्ञान स्वरोदय–भक्ति सागर–चरणदास पृ. सं. 124
26ण मनविरक्तकरण–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 296
27ण मनविरक्तकरण–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 295
28ण भक्ति पदार्थ–भक्ति सागर–चरणदास छंद.9 पृ. सं. 163
29ण भक्ति पदार्थ–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 173, 172
30ण भक्ति पदार्थ–भक्ति सागर–चरणदास पृ.सं. 246